"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

JAYOTI VIDYAPEETH WOMEN'S UNIVERSITY, JAIPUR

Faculty of Education & Methodology

DEPARTMENT OF FINE ARTS

Faculty Name	:	JV'n Pooja Janghel (Assistant Professor)
Program	:	2nd Semester / Year
Course Name	:	Bachelor of Fine Arts
Session No. & Name	:	2023 - 24 (Name of the Session)

Academic Day starts with –

- Greeting with saying **'Namaste'** by joining Hands together following by 2-3 Minutes Happy session, Celebrating birthday of any student of respective class and **National Anthem**.

Lecture Starts with-

Review of previous Session – Definition of fine arts by Indian scholars

- Topic to be discussed today- Today We will discuss about – Mauryan art
- Lesson deliverance (ICT, Diagrams & Live Example)-
- ➢ PPT (10 Slides)
- ➢ Diagrams

Introduction & Brief Discussion about the Topic - Mauryan art

सांची मूर्तिकला :

- प्रारंभिक भारतीय मूर्तिकला, जो मध्य प्रदेश के सांची में स्थित बौद्ध धातु मुद्रा के महान स्तूप (स्तूप संख्या 1) के 1 वीं सदी पूर्व के द्वार प्रवेशी को सजाने के लिए थी, जो अपने समय के सबसे शानदार स्मारकों में से एक है। हालांकि, सांची का क्षेत्र, जैसे कि सारनाथ और मथुरा के महान केंद्र, 3 वीं सदी ईसा पूर्व से 11 वीं सदी ईसा पूर्व तक लगातार कला इतिहास रखा। सांची तीन स्तूपों का स्थल है स्तूप संख्या 1, एक अशोकान संस्करण जिसे आगामी सदियों में बड़ा किया गया; संख्या 2, जिसमें शुंगकाल की रेलिंग सजावट है और संख्या 3, जिसमें द्वार प्रवेशी (त्यौहारिक गेटवे) है, क. 1 वीं सदी पूर्व से 1 वीं सदी ईसा पूर्व के। दूसरी दिलचस्प विशेषताएँ श्रेष्ठ भाषण में गुप्त स्तंभ स्तंभ संख्या 17 करीब 5 वीं सदी, जिसमें एक फ्लैट छत और स्तंभित पोर्टिको है और कई सदियों के बाद के मोनैस्टिक इमारतें।
- 1 वीं सदी ईसा पूर्व में जोड़े गए महान स्तूप के चार तोरण हैं, वे सांची की महान उपलब्धियां हैं। प्रत्येक द्वार दो वर्गीय खम्भों से मिलकर बना है, जिनके ऊपर सूचना के रूप में बने हुए हैं, जिन पर मूर्तिकला है, जिसमें बुद्ध के जीवन के घटनाओं, उनके पूर्वकथाओं (जातक कथाएँ), और बौद्ध धर्म के प्रारंभिक महत्वपूर्ण घटनाएं (जैसे अशोक सम्राट का बो वृक्ष के पास आगमन) का वर्णन किया गया है, साथ ही शुभ चिन्हों। प्रतिलिपियाँ मूर्तिकला दानकर्ताओं के नाम देती हैं; एक में विदिशा के हाथकर्मीयों की दान की याद करते हैं और इससे यह सुझाव दिया गया

है कि यहां इवोरी में काम करने की परंपरा को पत्थर में अनुवाद किया गया हो सकता है।

- मूर्तियाँ गहरी खुदाई गई हैं, ताकि चित्रित आकृतियाँ प्रबल भारतीय सूर्य की तेज दिन की गहरी छाया के साथ तैरती हो जाएं। पैनल, जो निरंतर कथन के यंत्र का उपयोग करते हैं, भरपूर, समृद्ध और जीवन से भरपूर हैं। बुद्ध को पूरे समय प्रतीकात्मक रूप में चित्रित किया गया है, एक चक्र, एक खाली सिंहासन, या एक जोड़ी पैर की प्रिंट के द्वारा।

स्तूप नंबर 1

- ऐतिहासिक स्थल सांची में स्थित संरक्षण के लिए सबसे महत्वपूर्ण संरचना; मध्य प्रदेश राज्य, भारत। यह देश के सबसे प्राचीन बौद्ध स्मारकों में से एक है और सांची स्थल पर सबसे बड़ा स्तूप है। महान स्तूप (जिसे स्तूप संख्या 1 भी कहा जाता है) का निर्माण प्रारंभ में 3 वीं सदी ईसा पूर्व में मौर्य शासक अशोक द्वारा किया गया था और माना जाता है कि यह बुद्ध की राख को धारण करता था। इस सरल संरचना को कहीं बार 2 वीं सदी ईसा पूर्व के दौरान क्षति पहुंची।
- इसका बाद में मरम्मत की गई और बढ़ाई गई, और तत्व जोड़े गए; यह अपने अंतिम रूप में 1 वीं सदी ईसा पूर्व में पहुंच गया। इस भवन की चौड़ाई 120 फीट (37 मीटर) है और ऊंचाई 54 फीट (17 मीटर) है। मध्य संरचना एक गोलकार गोलकार (आंडा) पर आधार पर बनी हुई है, जिसमें एक अद्भुत गुफा है।

- गोलकार अन्य चीजों के बीच आकाश की गोलकार छत का प्रतीक होता है। इसके ऊपर एक वर्गीय रेलिंग (हर्मिका) है, जिसे दुनिया पर्वत का प्रतीक कहा जा सकता है। एक मध्य स्तंभ (यष्टि) ब्रह्मांडिक धुरी का प्रतीक होता है और एक त्रिपुष्प ढाल संरचना (छत्त्र) का समर्थन करता है, जिसे बौद्ध धर्म के तीन रत्नों का प्रतीक माना जाता है - बुद्ध, धर्म (धार्मिक), और संघ (समुदाय)। एक गोलकार में एक दाइरी द्वारी (मेधी) होती है, जिसे दक्षिणावर्ती दिशा में पूजारी लोगों को पूजा करने के लिए होती है। पूरे भवन को एक कम दीवार (वेडिका) द्वारा घेरा गया है, जिसे चार मुख्य दिशाओं पर तोरणों काटा गया है।
- महान स्तूप के तोरण विशेषग्य हैं, प्रत्येक द्वार दो वर्गीय खम्भों से मिलकर बना है, जिनके ऊपर सूचना के रूप में बने हुए हैं, जिन पर बुद्ध के जीवन के घटनाओं, जातक कथाओं (बुद्ध के पूर्वकथाएँ), प्रारंभिक बौद्ध धर्म की घटनाएँ, और शुभ चिन्हों का चित्रण किया गया है। दाताओं के नाम भी अंकित हैं |
- 12 वीं सदी के बाद, सांची छोड़ दी गई और इसके स्मारकों में चरमराई में गिर गई। 1818 में ब्रिटिश जनरल हेनरी टेलर ने इस स्थल पर पहुंचा और अपनी खोज का विवरण किया। पुनर्निर्माण कार्य 1881 में शुरू हुआ और 1919 में भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के महान निदेशक जॉन ह्यूबर्ट मार्शल के पर्यवेक्षण में पूरा हुआ। महान स्तूप और सांची के अन्य बौद्ध स्मारकों को 1989 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।

- सुंगा काल के अंतर्गत कला, मुख्य रूप से बौद्ध स्तूपों की एकल रेलिंग्स और द्वारों की सजावट का बड़ा हिस्सा होता है, जो मूल रूप से राजा अशोक द्वारा शुरू किए गए थे, सांची में भोपाल, बरहुत में नागोद राज्य और कृष्णा नदी पर अमरावती में। शुंग काल के तहत कला में बौद्ध स्तूपों की पत्थर की रेलिंग और प्रवेश द्वारों की सजावट का बड़ा हिस्सा शामिल है, जो मूल रूप से राजा अशोक के अधीन भोपाल में सांची, नागोद राज्य में बरहुत और कृष्णा नदी पर अमरावती में शुरू हुआ था। इस अवधि के दौरान मथुरा कला विद्यालय भी फला-फूला। शुंग राजवंश की स्थापना 185 ईसा पूर्व में पुष्यमित्र शुंग ने की थी। शुंग साम्राज्य का केंद्र मगध था और मध्य भारत में मालवा तक फैला हुआ था। हालाँकि पहले स्नुंग शासक ने बौद्ध धर्म के साथ दुर्व्यवहार किया, शाक्यमुनि के धर्म और इसकी कला ने इस राजवंश के बाद के शासकों के तहत अपने महान रचनात्मक काल का आनंद लिया।
- पुष्यमित्र इस वंश का प्रथम शासक था, उसके पश्चात् उसका पुत्र अग्निमित्र, उसका पुत्र वसुमित्र राजा बना। वसुमित्र के पश्चात् जो शुंग सम्राट् हुए, उसमें कौत्सीपुत्र भागमद्र, भद्रघोष, भागवत और देवभूति के नाम उल्लेखनीय है। शुंग वंश का अंतिम सम्राट देवहूति था, उसके साथ ही शुंग साम्राज्य समाप्त हो गया था। मौर्य साम्राज्य के पतन के उपरान्त इसके मध्य भाग में सत्ता शुंग वंश के हाथ में आ गई।
- शुंगवंशीय :

पुष्यमित्र अन्तिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ का सेनापति था। उसने अपने स्वामी की हत्या करके सत्ता प्राप्त की थी। शुंग कला में चैत्य के स्तम्भ, वेदिका तथा तोरण उत्कीर्णन के आधार थे जिन पर नाना प्रकार की आकृतियों के अंकन मिलते हैं। समस्त कलाकृतियों में वस्त्रों का भारीपन, अलंकरण की बहुलता तथा अंगों की स्थिरता के बावजूद शारीरिक सुंदरता का उच्च प्रतिमान बरकरार रहा। शुंग कला अदालत की संस्कृति से पूरी तरह से मुक्त थी और बौद्ध विचारों से संश्लेषित लोक कला से बढ़ी। शुंग काल के दौरान विशाल मूर्तिकला का विकास किया गया। यद्यपि 112 वर्षों के शुंगों के शासनकाल में बौद्ध धर्म की गिरावट देखी गई थी, फिर भी बौध्द चैत्य भवन का निर्माण शुंग काल में किया गया। सूंगा कला मथुरा की, जिसे उसकी मूर्तियों में सर्वश्रेष्ठ रूप से व्यक्त किया जाता है,

- भारहुत

सांची की पुरानी परंपरा का एक पूर्ण प्राचीन शाखा का हिस्सा है। सूंगों और साका-क्षत्रपों के समय तक, मथुरा को पहले से ही कला केंद्र के रूप में मशहूर था। इस युग के दौरान, जैनों के इस उसके विरोध में 'भगवान द्वारा बना' वोदरा स्तूप का जिक्र है, जो वर्तमान कंकली टिल्स पर अपनी पूरी जयमाला में था। इस युग की प्राप्तियों में वोलूमनस पुरुषों के अद्भुत मूर्तियां, अमोहिनी पत्थर, रेलिंग स्तंभ, शेर के मुखाने और कुछ वास्तुकला अंश शामिल हैं। कुछ मूर्तियां जातक कथाओं का चित्रण करती हैं। मथुरा की सूंगा कला की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. मूर्तिकला बहुत ही साहसी नहीं है।

2. पुरुष और महिला दोनों मूर्तियों पर बहुत सारे आभूषणों से सजी हुई हैं।

3. वस्त्रकृति कुछ हीवजन है और बाद के काल की मूर्तियों की तरह हल्का नहीं है।

4. शांति, शांति, प्रलोभन, आश्चर्य, संयम आदि जैसी भावनाओं और अव्यक्त भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कोई प्रयास नहीं किए गए हैं।

5. सामान्यत: आँखों की अद्भुतता उनकी अवश्यकता के अभाव के कारण दिखाई नहीं देती है।

6. महिला आँखों के हीडगियर्स को माला और हार, मनी और मूल्यवान कपड़े के टुकड़ों से सजाती हैं।

7. पुरुष एक विशेष प्रकार की फ़्लफ़ी पगड़ी में प्रकट होते हैं, जिन्हें आमतौर पर ऊपर की ओट में सजाया गया है। पगड़ी के ऊपर बाल का एक कुंडल अक्सर दिखाई देता है।

8. गौतम बुद्ध की मूर्ति की अभाव सूंगा कला में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। यहां भगवान को विभिन्न प्रतीकों द्वारा प्रस्तुत किया गया है, जैसे कि स्तूप, त्रितंग चिन्ह (त्रिरत्न), हीरा गद्धी (वज्रासन), पगड़ी (ऊष्णीष), मांग पत्र (भिक्षा पत्र), पवित्र वृक्ष (बोधि वृक्ष), धर्म चक्र और अन्य।

- भारहुत स्तूप की कला एक अत्यंत महत्वपूर्ण भारतीय संग्रहण है, जो मथुरा से होने वाली है और सूंगा काल की मूर्तियों का प्रतिबिम्ब करती है। इस स्तूप की मूर्तिकला दिखाती है कि इस अवधि के बावजूद, विभिन्न धर्म संप्रदायों की सांस्कृतिक धरोहर को एक साथ प्रस्तुत करती थी, जैसे कि वैष्णव, शैव, और जैन संप्रदाय की मूर्तियां इसमें मौजूद थीं। इस कला के कामों में हेलेनिस्टिक कला के प्रभाव भी पाये जाते हैं, जैसे कि वस्त्र पहनने के तरीकों में। सूंगा कला अधिकांश आदर्शों, संस्कृति, परंपरा, और धार्मिक विचारधारा का प्रतिबिम्ब करती है।
- इस समय के सूंगा कला कामों में, बलराम और शिवलिंग जैसे महत्वपूर्ण चित्रण भी मिलते हैं। कुछ कामों में फूलों के बेल पैटर्न्स और हेलेनिस्टिक तत्वों के प्रभाव का पता चलता है, जैसे कि वस्त्र पहनने के तरीकों में।
- सूंगा कला के माध्यम से भारहुत स्तूप पर स्कल्प्चर्स का महत्वपूर्ण काम था, जिन्होंने फूलों के डिज़ाइन के साथ पशु, फिगर्स, यक्ष, और मानव फ़िगर्स को

संजीवनी दी। इस अवधि में वास्तुकला में प्रतीकों और मानव फ़िगर्स का अधिक उपयोग होता था, जैसे कि चैत्य हॉल के रूप में रॉक-कट टेम्पल के निर्माण में वृद्धि हुई।

सूखम नक्काशी वाले बलुआ पत्थर के संरचना और भारहुत स्तूप के आवास का काम बड़ा महत्वपूर्ण था, जो सतना, मध्य प्रदेश में स्थित था। इन छलांगवाली नक्काशों का काम अत्यधिक महत्वपूर्ण था और इन्हें पहली बौद्ध कला के कथात्मक उदाहरणों में से कुछ माना जाता है। इन नक्काशों में बुद्ध के उपदेश, जातक की कथाओं के प्रसंग, और बुद्ध शाक्यमुनि के जीवन की कहानियों का प्रतिष्ठान है।

स्तूप का आवास अब नहीं है, लेकिन उसके अवशेष, जैसे कि रेलिंग और गेटवे का हिस्सा, को 1873 में पुनर्प्राप्त किया गया। विशेषज्ञों का मानना है कि इसका निर्माण लगभग 250 ईसा पूर्व अशोक के शासनकाल के दौरान हुआ था, लेकिन इसे शुंग इम्पायर के दौरान अधिक विस्तारित किया गया था।

भारहुत स्तूप की वेदिका का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था, जिसकी ऊंचाई 3 मीटर और परिफेरी 20 मीटर थी। इसकी संरचना पर नक्काशियाँ थीं, जैसे कि स्तंभ, गोली या मेडैलियन जो एक स्तंभ को अगले स्तंभ से जोड़ते थे, और वेदिका की लंबाई पर चलने वाले पैनल्स, जो उसके शीर्ष पर जुड़ते थे। छलांगवाली नक्काशियाँ, जो वेदिका की आंतरिक और बाहरी सतहों पर आयोजित हुई थीं, विभिन्न विषयों पर चित्रण करती थीं, जैसे कि धर्मचक्र, वनस्पति, पशु, यक्ष, और यक्षियों के साथ बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण वनस्पति और पशु।

वेदिका के प्रत्येक स्तंभ पर विभिन्न नक्काशियाँ होती थीं, जिनमें मानव रूप और पशु विषयक चित्रण था। इसका एक महत्वपूर्ण प्रतीक कमल था, जिसे कुछ स्थानों पर फ़ूल के रूप में दिखाया जाता था, और कुछ जगहों पर उसके केंद्र से मानव रूपों के आगमन के साथ दिखाया गया था। स्तंभों पर बुद्ध की पूर्व जन्मों की कथाओं का चित्रण भी होता था, जो बुद्धपदस के रूप में जाना जाता है।

तोरण भी पत्थर से बना होता था और उसकी बाहरी और आंतरिक ओर नक्काशी होती थी। इसकी शून्यता में विभिन्न नक्काशियाँ दिखाई जाती थी, जैसे कि पशु, पौधों, अशुद्ध, और वास्तुकला तत्व, जिनमें ग्रीस सहित उपमहाद्वीप के बाहर के कुछ भीतर उपादानों के प्रभाव की सूचना दीती थी।

इन तोरणों के स्तंभों पर कमल डिस्क से सिंचाई गई थी, जिसके ऊपर धर्मचक्र होता था, जिस पर हर ओर धर्मचक्र के पैर थे, जो बौद्ध शिक्षा के प्रतीक होते हैं और की याद दिलाते हैं।

भारहुत स्तूप की मूर्तिकला ने भारत में प्रारंभिक बौद्ध धर्म का इतिहास और बौद्ध चित्रलेखन को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसका कला काम बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण गुणों को दर्शाने के साथ बुद्ध के उपदेशों की छवियों को भी प्रस्तुत करता है।

भारहुत स्तूप की चित्रकला को शुंग सम्राट के दौरान बने सांची स्तूप II की स्तम्भों के साथ तुलना की जाती है, हालांकि भारहुत के अधिकांश अवशेष सबसे जटिल माने जाते हैं। उनके अधिकांश अवशेषों को कोलकाता के इंडियन म्यूज़ियम में स्थानांतरित किया गया है।

इस अद्‌वितीय कला का समायोजन और मूर्तिकला की विविधता ने भारतीय संस्कृति और धर्म के विकास को दर्शाया है और यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत है।

- University Library Reference-

  …………

  …………….. Journal

  Online Reference if Any.

- Suggestions to secure good marks to answer in exam-

  Explain answer with key point answers

- Questions to check understanding level of students-

- Small Discussion About Next Topic-

- Academic Day ends with-

  National song' Vande Mataram'